IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन

मनोज कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
बी०एन०के०बी०पी०जी० कालेज, अकबरपुर (उ०प्र०)
manojbnkb@gmail.com

सारांश: बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करने के लिए वर्तमान जांच की गई। इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन के लिए प्रदत्त संग्रहण करने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके 300 बी.एड. प्रशिक्षुओं का चयन किया गया। अन्वेषक द्वारा प्रदत्त संग्रहण के लिए डॉ. एन.के. चड्ढा और उषा गणेशन (2009) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक बुद्धिमत्ता मापनी का उपयोग किया गया। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि बी.एड. के शहरी प्रशिक्षुओं एवं बीएड के ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया, बी.एड. के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं बीएड की महिला प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया एवं बी.एड. के कला वर्ग के प्रशिक्षुओं एवं बीएड के विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया ।

प्रमुख शब्द – सामाजिक बुद्धिमत्ता, शिक्षक प्रशिक्षु, बी.एड.

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि विद्यार्थियों की बुद्धि लब्धि न केवल उनकी शैक्षणिक क्षमता को बढ़ाने में, बल्कि उसके पूरे जीवन में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वह सफलता के मार्ग पर उनके जीवन की योजना और संरचना को निर्धारित करती है। बुद्धिमत्ता, खुद को अधिक आसानी से, दक्षता के साथ बदलते परिवेश में सफलतापूर्वक समायोजित करने और भविष्य के प्रयोग हेतु उन परिस्थितियों को बेहतर ढंग से याद रखने की क्षमता है। सामाजिक बुद्धिमत्ता, लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संतुलन बनाने की क्षमता है। यह समाज में समायोजन करने की क्षमता को संदर्भित करती है तथा संतुष्टि, आत्म समायोजन और सामाजिक समायोजन के रूप में परिलक्षित होती है। संतुष्टि मानव की मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों का संतुलन है। हर व्यक्ति के जीवन में संतुष्टि का स्तर अलग-अलग होता है। उसी तरह हर व्यक्ति की सामाजिक बुद्धिमत्ता का स्तर अलग-अलग होता है। कुछ व्यक्ति अंतर्मुखी होते हैं और कुछ व्यक्ति बहिर्मुखी होते हैं। सामाजिक बुद्धिमत्ता किसी व्यक्ति के जीवन में सफल होने के लिए महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। बहुत से लोग, भले ही उनके पास उच्च अमूर्त बुद्धि हो, इस प्रकार की बुद्धि की कमी के कारण जीवन की स्थिति में दुःखी एवं असफल होते हैं। उच्च सामाजिक बुद्धि उन लोगों के पास होती है जो लोगों को अच्छी तरह से संभालने में सक्षम होते हैं। यह उन लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है शिक्षकों, राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, श्रमिकों, कंपनियों के अभिकर्ताओं और अन्य प्रकार के नेताओं के रूप में व्यवहार करते हैं। इस प्रकार के कार्यों में रत व्यवसायिकों को सामाजिक बुद्धि की आवश्यकता अधिक होती है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता

सामाजिक का संबंध समाज से है और बुद्धिमत्ता का अर्थ है समायोजन की क्षमता। इसलिए, सामाजिक बुद्धिमत्ता किसी व्यक्ति की अपने समाज, पर्यावरण, परिस्थितियों और जीवन की समस्याओं के साथ समायोजन करने की क्षमता है। जीवन तभी सार्थक होता है जब हमारे पास खुशी और संतुष्टि हो। अच्छे रिश्ते भावनाओं के सबसे मजबूत स्रोतों में से एक हैं। व्यक्तिगत संबंध भावनात्मक विटामिन की तरह होते हैं। 1920 के दशक में थॉर्नडाइक ने अनेक प्रकार की बुद्धियों के बारे में लिखा था, जिसमें से एक को "पारस्परिक बुद्धिमत्ता" कहा जाता था, जिसे सामाजिक बुद्धिमत्ता के रूप में भी जाना जाता है। सामाजिक बुद्धिमत्ता एक व्यक्ति की दूसरों के साथ बातचीत करने, संबंध बनाने और सम्बन्धों को बनाए रखने की क्षमता है। सामाजिक बुद्धिमत्ता में सामाजिक जागरूकता, प्राथमिक सहानुभूति, सामंजस्य, सहानुभूति सटीकता और सामाजिक अनुभूति, सामाजिक सुविधा, समकालिकता एवं आत्म प्रस्तुति आदि शामिल हैं। सामाजिक बुद्धिमत्ता सामाजिक त्वं से संबंधित है जिसमें शामिल हैं दूसरों को समझना एवं सामाजिक सक्षमता। आज सामाजिक बुद्धिमत्ता के बिना मनुष्य प्रभावी रूप से नहीं रह सकता है। इसके बिना वह उन लोगों में जो उसका शोषण करते हैं तथा उन लोगों में जो उसका शोषण नहीं करते के मध्य अंतर नहीं कर सकता। वह अपने जीवन जीने के तरीके के विकल्पों से अनभिज्ञ रहता है। वह शिकायतों का समाधान नहीं कर सकता क्योंकि वह नहीं जानता कि वह जो करना चाहता है उसे हासिल करने के लिए घटनाओं में प्रहस्तन कैसे किया जाए। वह अपने मन को मज़बूत नहीं बना सकता एवं यह भी कि दूसरे कब उसके लिए यह कर देते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

संक्षेप में वह ऐसे विकल्प नहीं चुन सकता जो उसके हितों की पूर्ति करते हों। सामाजिक बुद्धिमत्ता के बिना जीना लोकतंत्र के साथ बिल्कुल असंगत है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति से सामान्य सामाजिक जीवन के प्रबंधन में भाग लेने और यथासंभव समृद्ध जीवन का आनंद लेने की अपेक्षा की जाती है। सामाजिक बुद्धिमत्ता का तात्पर्य अन्य लोगों के विचारों, भावनाओं और इरादों को उनके अशाब्दिक व्यवहारों के माध्यम से पहचानने की क्षमता से है। इस बौद्धिक क्षमता में उच्च स्कोर करने वाला व्यक्ति लोगों की प्रेरणाओं को समझने, सामाजिक संबंधों को समझने और रोजमर्रा की समस्याओं को समझने में सक्षम होगा। वह बहुत आसानी से दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने में सक्षम होगा। यह बहुत संभव है कि किसी व्यक्ति की सामाजिक बुद्धि उच्च हो, जबकि अमूर्त और ठोस बुद्धि में उसकी तुलनीय क्षमताएँ न हों।

परंपरागत रूप से सामाजिक बुद्धिमत्ता को रूढ़िवादी अतीत द्वारा युवा पीढ़ी को दिए गए सामाजिक मानदंडों/मानकों को स्वीकार करने के रूप में जाना जाता है। यह वर्तमान की सामाजिक-आर्थिक राजनीतिक स्थिति के बारे में जागरूकता है। यह लोगों को प्रभावित करने और दोस्त बनाने का तरीका है। लेकिन सामाजिक बुद्धिमत्ता के निर्माण के लिए एक स्पष्ट परिभाषा की आवश्यकता होती है। थॉर्नडाइक (1920) ने सामाजिक बुद्धिमत्ता को "मानवीय सम्बन्धों को प्रबंधित करने की क्षमता एवं मानवीय संबंधों में समझदारी से काम लेने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया। गुड (1959) का भी यही मानना है कि "सामाजिक बुद्धिमत्ता दूसरों के साथ अपने संबंधों में प्रभावी ढंग से काम करने की क्षमता है"। गार्डनर (1983) ने अपनी पुस्तक "फ्रेम्स ऑफ माइंड" में लिखा है कि "स्वयं को जानने और दूसरों को जानने की क्षमता मानवीय स्थिति का अभिन्न अंग है। सामाजिक बुद्धिमत्ता मनुष्य में वह गुण है जो उसे व्यापक संभव शब्दों में जागरूक और सामाजिक समझ के योग्य बनाता है। सामाजिक बुद्धिमत्ता न केवल वित्तीय या शैक्षणिक या पारस्परिक सफलता है बल्कि यह ऐसी समझ भी है जो मानव के जीवन को सार्थक बनाने और उनके जीवनकाल के दौरान और उसके बाद उनके समाज को बेहतर बनाने में सहायक होती है।

शोध अध्ययन की समस्या-

उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन

शोध अध्ययन का औचित्य-

प्रस्तुत शोध अध्ययन अम्बेडकर नगर जनपद के बीएड प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता की परख करने के उद्देश्य से किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि पर्याप्त शोध समीक्षा के उपरान्त भी अम्बेडकर नगर जनपद के शिक्षक प्रशिक्षुओं की जनसंख्या की सामाजिक बुद्धिमत्ता से सम्बंधित अध्ययनों का स्पष्ट अभाव पाया गया। इस प्रकार इस शोध अन्तराल को पूरित करना ही प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. पुरुष और महिला बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी और ग्रामीण बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. पुरुष और महिला बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी और ग्रामीण बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की रूपरेखा

उद्देश्यों और परिकल्पनाओं के अनुसार वर्तमान अध्ययन की रूपरेखा का निर्माण किया गया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रकार का प्रयोग किया गया।

प्रतिचयन

वर्तमान अध्ययन के लिए अम्बेडकरनगर जिले के विभिन्न बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं में से 300 बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं का प्रतिदर्श चयनित किया गया। यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के फलस्वरूप निम्नलिखित विवरण के अनुसार प्रतिदर्श प्राप्त हुए थे-

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

लिंग	शहरी	ग्रामीण	कला	विज्ञान	योग
महिला	68	79	84	63	147
पुरुष	71	82	89	64	153
योग	139	151	173	127	300

उपकरण

प्रदत्त संग्रहण के लिए डॉ० एन. के. चड्ढा और उषा गणेशन द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत "सामाजिक बुद्धिमत्ता मापनी" (2009) का उपयोग किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण, परिणाम एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बी.एड. के महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं, शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं तथा विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के प्रशिक्षुओं के समूहों की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन ज्ञात कर समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता का परीक्षण करने हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गयी जिनके मान तालिका में प्रस्तुत हैं –

तालिका : बीएड के प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों की तुलना

समूह	संख्या (N)	सामाजिक बुद्धि का मध्यमान (M)	सामाजिक बुद्धि का मानक विचलन (σ)	स्वतंत्राश (d.f.)	क्रांतिक अनुपात (C.R.)	व्याख्या
महिला प्रशिक्षु	147	82.27	6.87	298	.3697	.05 स्तर पर सार्थक नहीं
पुरुष प्रशिक्षु	153	81.64	5.19			
शहरी प्रशिक्षु	139	86.39	7.62	298	.0834	.05 स्तर पर सार्थक नहीं
ग्रामीण प्रशिक्षु	151	84.77	8.21			
कला वर्ग प्रशिक्षु	173	88.39	9.672	298	.2064	.05 स्तर पर सार्थक नहीं
विज्ञान वर्ग प्रशिक्षु	127	86.84	11.48			

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि बी.एड. के पुरुष प्रशिक्षुओं के समूह में 153 प्रशिक्षु थे, जिनका सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 81.64 एवं 5.19 था जबकि बी.एड. की महिला प्रशिक्षुओं के समूह में प्रशिक्षुओं की संख्या 147 थी, जिनकी सामजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 82.27 एवं 6.87 था। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान .3697 था, जो 0.05 सार्थकता स्तर एवं 298 स्वतन्त्रता कोटि पर असार्थक पाया गया। अतः सम्बंधित शून्य परिकल्पना $H_0$1, *बी.एड. के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है* स्वीकृत की गयी। अतः यह परिणाम प्राप्त हुआ कि बी.एड. के पुरुष प्रशिक्षुओं एवं बीएड की महिला प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि बी.एड. के शहरी प्रशिक्षुओं के समूह में 139 प्रशिक्षु थे, जिनका सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 86.39 एवं 7.62 था जबकि बी.एड. के ग्रामीण प्रशिक्षुओं के समूह में प्रशिक्षुओं की संख्या 151 थी, जिनकी सामजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 84.87 एवं 8.21 था। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान .0834 था, जो 0.05 सार्थकता स्तर एवं 298 स्वतन्त्रता कोटि पर असार्थक पाया गया। अतः सम्बंधित शून्य परिकल्पना $H_0$2, *बी.एड. के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है* स्वीकृत की गयी। अतः यह परिणाम प्राप्त हुआ कि बी.एड. के शहरी प्रशिक्षुओं एवं बीएड के ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया ।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि बी.एड. के कला वर्ग के प्रशिक्षुओं के समूह में 173 प्रशिक्षु थे, जिनका सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 88.39 एवं 9.672 था जबकि बी.एड. के विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं के समूह में प्रशिक्षुओं की संख्या 127 थी, जिनकी सामजिक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 86.84 एवं 11.48 था। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य क्रांतिक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

अनुपात का मान .2064 था, जो 0.05 सार्थकता स्तर एवं 298 स्वतन्त्रता कोटि पर असार्थक पाया गया। अतः सम्बंधित शून्य परिकल्पना $H_0$1, *बी.एड. के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है* स्वीकृत की गयी। अतः यह परिणाम प्राप्त हुआ कि बी.एड. के कला वर्ग के प्रशिक्षुओं एवं बीएड के विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शैक्षणिक निहितार्थ

निष्कर्षों का शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों और निश्चित रूप से छात्रों के लिए व्यावहारिक निहितार्थ है। शिक्षक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षु शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि विकसित करनी चाहिए। उन्हें प्रशिक्षुओं को उन कार्यों में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए जिनमें सहयोग की आवश्यकता होती है। इससे उनकी सामाजिक बुद्धि विकसित होगी। सामाजिक बुद्धि विकसित करने के लिए मार्गदर्शन सेवा प्रदान की जानी चाहिए। प्रशिक्षु शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए सेमिनार, कार्यशाला आदि जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में योजना इस प्रकार की होनी चाहिए कि सामाजिक बुद्धि के विकास के लिए पर्याप्त अवसर मिल सकें। माता-पिता, शिक्षक-प्रशिक्षकों और प्रशासन को बी.एड शिक्षक प्रशिक्षुओं को उनके अंतर्मुखी व्यवहार से बाहर आने में मदद करनी चाहिए। उन्हें खुद पर विश्वास करने में मदद करनी चाहिए। उन्हें आत्मविश्वासी, सामाजिक रूप से जागरूक, सामाजिक संगठनकर्ता और आशावादी बनाना चाहिए। इससे वे सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Anglada, M. (2007) "Collaboration and alliances: Social intelligence applied to academic libraries" www.recercant.net/bitstream/2072/ 4902/1 Anglada Collaborations. pdf.
[2]. Biswas, A & Agarwal J.,C (1971) (Edi.): Encyclopedic Dictionary and Directory of Education. Vol. 1. N.D. The Academic Publishers, 1971, 155
[3]. Bhatnagar & Sexena, A (2000). "Advanced Educational Psychology". Meerut, Surya Publications.
[4]. Buch, M,B.(1960). "Third survey of research of education", National Council for Educational Research and Training, New Delhi, 1987,469
[5]. Chadha, N.,K & Ganesan,U (1992). "Manual for Social Intelligence Scale", Agra; Psychological Corporation, 1986, 3-7.
[6]. Chauhan, S,S. (1992), "Advanaced Educational Psychology", New Delhi: Vikas Publishing House, 1992, 261-285
[7]. Gangopadhyay (1975), "Social Intelligence and its Relationship with Abstract and Mechanical Intelligence.". Ph.D (Edu), Second Survey of Research in Education NCERT, New Delhi. 134.
[8]. Gardner, H (1983), "Frames of mind,: The theory of Multiple Intelligence", New York: Basic Books, 1983,243
[9]. Garrett, Henry E., Statistics in psychology and education. Bombay: Vakils, Faffer and Simons ltd..,1981
[10]. Good C.V. (1959), "Dictionary of Education". New York.: McGraw Hill Book Co., Inc. 1945,222
[11]. Guilford, J.P, Three factors of intellect. American Psychology, 1959, 14, 469-479.
[12]. Harpreet & Kalaramma (2004) "Interrelationship between Home Environment, Social intelligence and Socio-Economic Status among Males and Females". Journal of Human Ecology, 16(2), 137-140
[13]. Saini,P (2005). "Benefits of Social Intelligence in Home Dialogue System" www.springer.com/index/730f6qh4 by 68431.
[14]. Saxena & Jain (2013). "Social intelligence of undergraduate students in relation to their gender and subject stream". Retrieved from IOSR, Journal of Research and Method in Education (IOSR-JRME) 1 (1) 1-4, 10 Nov, 2014.
[15]. Thorondike, E.L (1920). "Intelligence and its uses". Harper's Magazine 1920, 140, 227-235.